इलाहाबाद और कौशाम्बी में टिश्यू कल्चर से तैयार होंगे स्वादिष्ट केले

इलाहाबाद और कौशाम्बी में अब टिश्यू कल्चर की मदद से स्वादिष्ट केलों का उत्पादन हो सकेगा। यहां के केला उत्पादकों को अब दक्षिण भारत से पौध नहीं लानी पड़ेगी। सैम हिग्गिनबॉटम इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर, टेक्नोलॉजी एण्ड साइंसेज (शियाट्स) से पीएचडी करने वाले डॉ. गौरव कृष्ण ने इलाके की पहली टिश्यू कल्चर लैब दारागंज में स्थापित की है।

कौशाम्बी और इलाहाबाद के केला उत्पादकों को रोपने के लिए केले का पौधा दक्षिण भारत से लाना पड़ता है। यह पौधे काफी महंगे पड़ते हैं और इनकी कोई गारंटी भी नहीं होती है। डॉ. गौरव किसानों को अपनी लैब में टिश्यू कल्चर से तैयार किए गए पौधे देंगे। जुलाई से शुरू हो रहे केले के सीजन में उन्होंने एक लाख पौधे देने का लक्ष्य तय किया है। वे 20 हजार पौधे तैयार भी कर चुके हैं।

बायोटेक्नोलॉजी में एमएससी के बाद पीएचडी पूरी करते ही डॉ. गौरव को हैदराबाद की एक बड़ी कंपनी में नौकरी मिल गई थी। नौकरी छोड़ उन्होंने अपने तकनीकी ज्ञान का इस्तेमाल खुद के व्यवसाय में करने का संकल्प लिया। परिवार की मदद से इलाहाबाद एडवांस एग्री सॉल्यूशन संस्था बनाकर दारागंज के बक्शी कलां में टिश्यू कल्चर लैब की स्थापना की। डॉ. गौरव कहते हैं कि वे किसानों को न केवल कम दाम पर वायरस प्रतियोगी उन्नतशील केले के पौधे मुहैया कराएंगे बल्कि खेती में उनकी तकनीकी मदद भी करेंगे। बकौल डॉ. गौरव दक्षिण भारत से मंगाए जाने वाले पौधों से प्रति पौधा औसतन 18 से 20 किलो केले की उपज हो रही है। दावा है कि उनकी लैब में तैयार पौधे से 25 किलो तक उपज मिल सकेगी।

इलाहाबाद, आनंद मिश्रFirst Published:23-05-2016 02:00:56 PMLast Updated:23-05-2016 02:00:56 PM

औषधीय पौधों का भी करेंगे उत्पादन

डॉ. गौरव कहते हैं कि कौशाम्बी यूपी में केला उत्पादन के बड़े केंद्र के तौर पर जाना जाता है। इसलिए उन्होंने केले से शुरुआत की है। उनकी योजना आगे चलकर अनार, गन्ना, हल्दी और अदरक के साथ ही कुछ औषधीय पौधों का टिश्यू कल्चर करने की भी है। डॉ. गौरव की इच्छा इलाहाबाद को टिश्यू कल्चर के बड़े केंद्र के तौर पर स्थापित करने की है। इसी मंशा से वह अपनी लैब में बायो कृषि विज्ञान की पढ़ाई करने वाले छात्रों को प्रशिक्षित भी कर रहे हैं।

हर साल बढ़ रही केले की पैदावार

उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग के आंकड़े बताते हैं कि यूपी में केले की खेती का तेजी से विस्तार हो रहा है। वर्ष 2013-14 में 2636 हेक्टेयर में केले की खेती हुई और पैदावार 114776 मीट्रिक टन रही। 2014-15 में केले की खेती का एरिया बढ़कर 42571 हेक्टेयर हो गया और उपज रही 1989830 मीट्रिक टन जबकि 2015-16 में 55342 हेक्टेयर में केले की खेती हुई और उपज 2606677 मीट्रिक टन रही।

इलाहाबाद, आनंद मिश्रFirst Published:23-05-2016 02:00:56 PMLast Updated:23-05-2016 02:00:56 PM